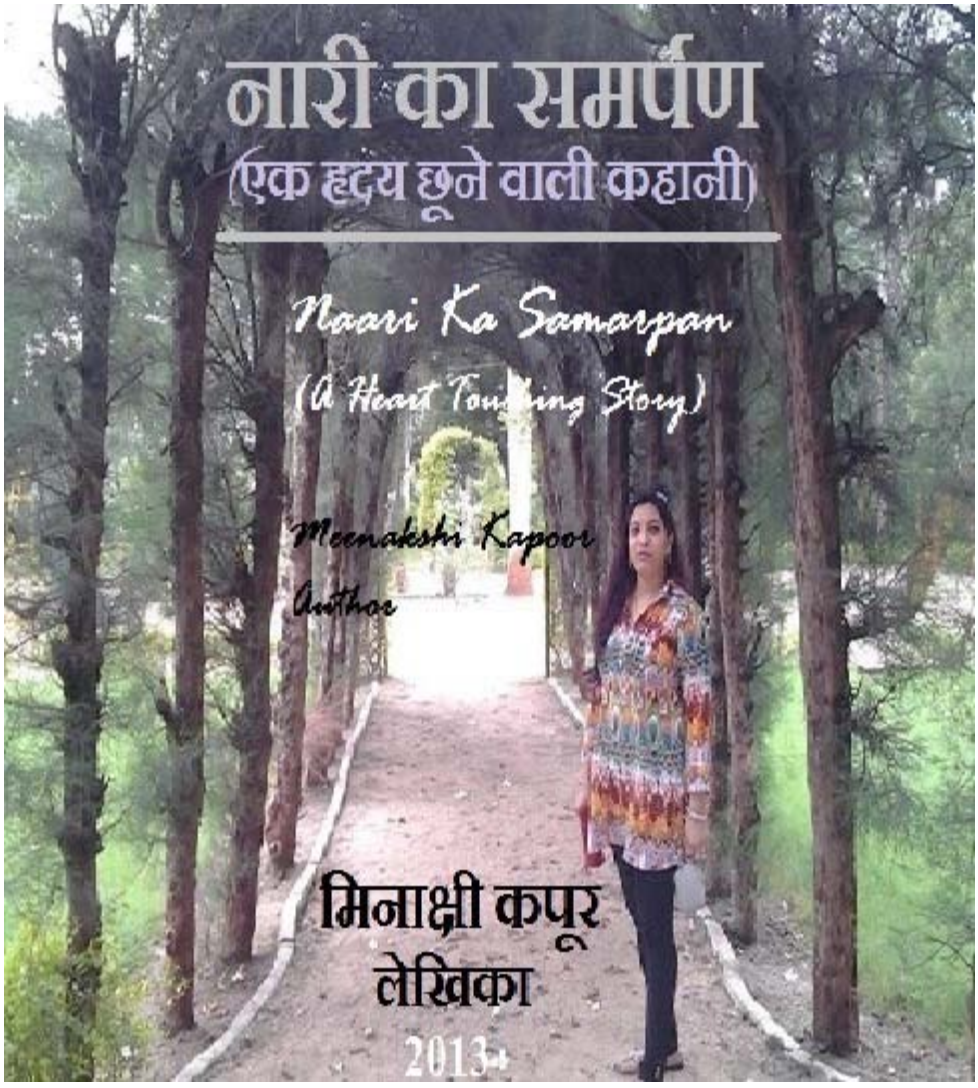
नारी का समर्पण
(एक हृदय छूने वाली कहानी)
Naari Ka Samarpan
(A Heart Touching Story)
Meenakshi Kapoor
Author
मिनाक्षी कपूर
लेखिका
2013

नारी का समर्पण

मिनाक्षी कपूर

मैं अपने पति , माता–पिता, भाई–बहन, सगे–सम्बन्धि और सभी मित्रों को तह दिल से धन्यवाद अदा करना चाहती हूं जिन्होने मुझे यह उपन्यास लिखने में प्रोत्साहन दिया है।

लेखिका

मिनाक्षी कपूर

यह कहानी एक ऐसी लड़की की है जिसके पिछे इंसान के रूप में भेड़िये पड़े हुये थे। हर मोड़ पर, हर रास्ते पर उसका इंतजार कर रहे थे। कब वो हमारे पास आये और हम उसे अपना शिकार बना लें। लेकिन उस लड़की ने ड़ट कर उन भेड़ियों का सामना किया और वहां से वह सुरक्षित बाहर निकल आई। परंतु उन भेड़ियों का सामना करते समय वह घायल भी हुई और उसका नुकशान भी हुआ। उसकी हिम्मत टुटी नहीं और उसने हार नहीं मानी। ऐसे भेड़िये तो हमें घर – घर में मिल जायेंगे, जैसे इस कन्या को भी मिले। बस उन्हें पहचानने की जरूरत होती है हमें।

मार्च का महीना सन् 1977 में होली का पर्व मनाया जा रहा था और एक साधारण से परिवार में एक कन्या का जन्म हुआ। रात के 11:00 बजे थे उस समय जैसे ही कन्या का जन्म हुआ उसकी दादी ने जाकर सबको खबर दी की हमारे घर कन्या के रूप में मानों जैसे देवी ने जन्म लिया है। उस दिन से उस कन्या की दादी उसके रोज पैर छूती थी और बोलती थी हे देवी मईया अगली बार एक बेटा भी दे देना मेरी बहू को। उस कन्या के चेहरे पर बहुत तेज नजर आता था। प्रत्येक व्यक्ति उसकी आँखों में ही खो जाता जो भी उसे देखता था। उसका नाम गंगा रखा गया। गंगा अपने नाम की ही तरह पवित्र भी थी परंतु लोगों ने उसे गंदा करने की भरपूर कोशिश भी की। वही छोटी सी लड़की गंगा बहुत ही सुंदर और नटखट थी। वो सिर्फ अपनी ही दुनिया में खोई रहती थी। उसे यह सारा संसार और यहाँ का प्रत्येक व्यक्ति बहुत ही सुंदर और सच्चा लगता था। गंगा प्रत्येक इंसान को अपनी तरफ आकर्षित करती थी। लेकिन लोग उसकी खूबसूरती से जलते थे। वह बचपन से ही लोगों की आँखें पढ़ लेती थी, वह अपनी आँखों में पहले ही वह सब कुछ देख लेती थी जो कुछ होने वाला है और उसे पहले ही चीजों का आभास हो जाता था। वह अपने सपनों में सब कुछ देख लेती थी। लेकिन जब भी उसने अपनी बातें, अपने सपने अपने घर वालों या दोस्तों को बताया तो उन्होनें सिर्फ उसका मज़ाक ही बनाया और वह दुःखी हो जाती थी। जब वह स्कूल जाने लगी तो वहाँ पर उसके दोस्तों ने सिर्फ उसका फायदा उठाया कभी–कभी तो वह समझ ही नहीं पाती थी कि, उसके दोस्त सिर्फ उससे मतलब से ही बातें करते हैं। वह दिल की बहुत ही साफ थी। धीरे–धीरे गंगा बड़ी होने लगी। जब वह 5 साल की थी तभी उसने अपने पति और खुद को सपने में देख लिया था। लेकिन उस समय वह समझ नहीं पाई थी कि, यह दोनों कौन हैं जिन्हें वह बार–बार अपने सपनों में देख रही है। उसे नृत्य करना और गीत गाना बहुत अच्छा लगता था। लेकिन उसके परिवार ने कभी उसे समझा ही नहीं। वह उसे एक छोटा बच्चा समझते रहे। लेकिन वह कला क्षेत्र में कुछ करना चाहती थी, परन्तु उसे कभी भी किसी ने समझा ही नहीं। उसकी उम्र बढ़ती चली गई लेकिन उसकी

आखों में हर पल एक सपना रहता था। उसके दोस्तों ने हमेशा उसे धोखा दिया जिस वज़ह से वह दुखी रहती थी वह दोस्त बनाने से भी डरती थी। उसे ऐसा लगता था कि वह जिस चीज को भी अपना मानकर प्यार करती है वह उसको या तो धोखा दे देता है या फिर दूर हो जाता है। वह जिंदगी को जितना खूबसूरत समझती थी, जिन्दगी उतनी खूबसूरत नहीं थी। व्यवहार से जितनी वह चुलबुली थी उतनी ही वह दिल से मायूस रहती थी। वह लोगों से डरती थी लेकिन किसी को भी वह दिखाती नहीं थी। इसलिए लोग उसे मूर्ख ही समझते थे। धीरे–धीरे समय निकलता गया वह बढ़ी होने लगी और इसके साथ–साथ उसकी इच्छाएँ भी बढ़ने लगी थी। कुछ इच्छाएँ तो उसकी पूरी हो जाती थीं लेकिन कुछ मन में ही रह जाती थीं। उसके माता पिता और भाई–बहन भी उसे बहुत प्यार करते थे। लेकिन जब एक दिन उसने अपनी माँ से कहा, माँ मुझे नृत्य सीखना है तो उसकी माँ ने उसे मना कर दिया। सबको ऐसा लगता था कि वह दूसरों की नकल करती है। उसके पिता ने तो यहाँ तक बोल दिया पढ़ाई लिखाई तो होती नहीं है, नृत्य करोगी। हमारे खानदान की लड़कियाँ नाच–गानें नहीं करती हैं। यह सुनकर उसका दिल टूट गया और अकेले में जाकर वह बहुत रोई जो किसी को भी नहीं पता चला। लेकिन उसके बाद उसने नृत्य करना छोड़ दिया। जब भी कभी कहीं पर भी गाना बजता था या फिर कभी टी.वी. में या कभी कोई बारात की आवाज आती थी तो वह देखती ज़रूर थी। उसका मन करता था लेकिन कभी उसने नृत्य नहीं किया। उसका मन करता था लेकिन वह नृत्य कर नहीं पाती थी। उसे ऐसा महसूस होता था मानों उसे नृत्य करना ही नहीं आता है। उसके मन में एक इच्छा पैदा हो गयी थी, जो उसके मन में बढ़ती ही जा रहा था। वह अब कुछ भी करने से पहले डरती थी। उसका पढ़ाई में मन नहीं लगता था। उसे कुछ भी करना पंसद नहीं था। लेकिन फिर भी वह लोगों के सामने हंसी–मजाक भी करती थी, खेलती भी थी। वह सारे सामान्य कार्य भी करती थी। किसी को आभास तक नहीं था कि, उसके मन में क्या चल रहा है। उससे अगर कभी कोई नृत्य करने को कहता था तो वह हँसकर बोल देती कि, मैं नृत्य करना नहीं जानती हूँ। वह कला के क्षेत्र में कुछ करना चाहती थी। उसके परिवार को ऐसा ही लगता था कि, कला तो बेकार की चीज है सिर्फ पढ़ाई लिखाई करने से ही हम कुछ बन सकते हैं। लेकिन वह ऐसा नहीं सोचती थी। उसे हमेशा ऐसा लगता था कि उसके जीवन में भी कभी न कभी कोई चमत्कार जरूर होगा। उसकी एक बड़ी बहन भी थी। वह बड़ी ही साधारण तरीके से रहती थी इसलिए सभी उसे बहुत ही समझदार और संस्कारी कहते थे। लेकिन उसे कभी बुरा नहीं लगता था कि, सब लोग उसकी बहन की तारीफ करते हैं और उसे नासमझ कहते हैं। वह हर पल सपने देखा करती थी। लेकिन यह सपने सिर्फ सपने ही थे क्योंकि वह जानती थी कि उसे कोइे सकार नहीं

करेगा। जब वह किशोर अवस्था में आई तो बहुत सारे लोगों ने उसकी सुन्दरता का फायदा उठाने की कोशिश करी लेकिन देवी माँ के आर्शिवाद से कोई कुछ नहीं कर पाया। अब वह बहुत ही सुंदर हो गई थी, उसकी सुंदरता से उसकी सहेलियाँ जलती थी। वह मर्दों से बचपन से ही नफरत करती थी शायद कुछ पिछले जन्म का असर था जब वह 5 वर्ष की थी उस समय उसके एक दूर के रिश्तेदार ने उसका शोषण करने की कोशिश भी की थी वो भी दो बार, वह डर गई थी और उसने किसी को भी वह बात नहीं बतायी थी। उस समय वह व्यक्ति 18 वर्ष का था। पूरे जीवन जब कभी भी वह इसके सामने आता था तो गंगा का खून खौल जाता था उसे देख कर। लेकिन उस इंसान की हमेशा ही बुरी नज़र रहती थी गंगा के ऊपर। जब वह 10वीं कक्षा में थी तब उसने अपने पापा से कहा, पापा मेरे लिए एक बुटिक खुलवा दो। उसकी माँ तो तैयार थी उसके साथ काम करने के लिए लेकिन उसके पापा ने उनका साथ नहीं दिया। वह चित्रकारी भी बहुत अच्छी करती थी लेकिन उसका हुनर किसी को नहीं दिखाई दिया। सबको सिर्फ ऐसा ही लगता था कि यह इसका सिर्फ शौक है। गंगा मंहदी और साड़ीयों इत्यादि कि डिजाईन भी बहुत अच्छी बनाती थी। वह कागज पेंसिल चलाती जाती थी और रचना तैयार हो जाती थी। उसके अंदर अनेकों हुनर थे, लेकिन उसे किसी ने भी नहीं पहचाना। कला के क्षेत्र में वह निपुर्ण थी। सभी ने उसके अंदर सिर्फ बचपना ही देखा और उसे नासमझ ही समझते रहे।

एक दिन घर पर पापा के मित्र आए। उस वक्त गंगा Textile Design बना रही थी जब पापा के मित्र ने जब उसका उसका हुनर देखा तो उन्होंने पापा से बोला गंगा तो बिना सीखे ही इतना अच्छा काम करती है तो आप इसे कोई कोर्स क्यों नहीं करा देते। उसके पापा को अपने दोस्त की बात समझ आ गई और तब उन्होंने उसे एक छोटी अवधि का Textile Design कोर्स करवा दिया। वह अपनी कक्षा में प्रथम आई। उसने 12वीं भी पास कर ली थी। तभी उसके पापा का तबादला अहमदाबाद हो गया और वह अपने माँ–पिता के साथ वहाँ पर चली गई। जब वह वहाँ जा रही थी तो पूरे रास्ते उसे एक अजीब सा अहसास हो रहा था मानों उसका जीवन बदलने वाला हो जैसे। उसे ऐसा लग रहा था जैसे उस शहर में कोई उसका इंतजार कर रहा है। उन्हीं दिनों उसकी बढ़ी बहन मुम्बई से वापस आई थी अपने कला के प्रशिक्षण को खत्म कर के और उस का छोटा भाई भी वापी से घर आया था। वह बहुत खुश थी क्योंकि सभी एक साथ थे। उसे सभी के साथ रहना बहुत पसंद था। लेकिन ऐसा नहीं था, उसकी बडी बहन बरौड़ा में रहती थी और छोटा भाई वापी में रहता था। वह अपने माँ–पिताजी के साथ अकेली रहती थी। वह अपने भाई के साथ कई प्रकार की

Indoor Game खेलना पसंद करती थी। कुछ दिनों बाद भाई–बहन वापस अपने – अपने शहर चले गए और गंगा का भी विश्वविद्यालय में दाखिला हो गया था। उसके लिए यह एक नया तर्जुबा था। पहले दिन उसके पापा उसे कॉलेज छोड़ने गए थे। वह उस दिन थोड़ी सी ड़री हुई थी। पहले ही दिन उसकी दोस्ती एक लड़के से हुई। उसने गंगा की मदद की थी, उसकी कक्षा तक पहुँचाने के लिए। धीरे–धीरे गंगा के बहुत सारे दोस्त बन गए थे। वह अपने सभी दोस्तों को बहुत प्यार करती थी सच्चे दिल से। उसके एक प्रोफेसर थे जो उसे बहुत पसंद करते थे क्योंकि गंगा बहुत ही सुदंर और संस्कारी लड़की थी। वह कभी झूठ नहीं बोलती थी। फिर एक दिन उसके प्रोफेसर ने उसे विश्वविधालय के समारोह के लिए चुन लिया। उस समय उसकी खुशी का ठिकाना नहीं था। जो वह बचपन से करना चाहती थी, उसे अब जाकर वह मौका मिल गया था। उसने अपने माँ–पिता को भी यह सब बताया तो उन्होने भी उसे अनुमति रदे दि थी। वहाँ पर उसके और नए दोस्त बन गऐ थे। उसे सब कुछ अच्छा लग रहा था। उसका ज्यादा से ज्यादा वक्त नाटक अभ्यास के लिए बीतने लगा। उसे यहाँ का माहौल आकर्षित भी करता था। वहीं पर उसकी दोस्ती राम नाम के लड़के से हुई । धीरे–धीरे उन दोनों की दोस्ती गहरी होने लगी। एक दिन राम ने गंगा को अपने का प्यार का इज़हार कर दिया था। वह गंगा से प्यार करने लगा था लेकिन गंगा ने तो उसे इस नजर से कभी देखा तक नहीं था। वह उसे सिर्फ अपना एक अच्छा दोस्त ही समझती थी। गंगा ने मना कर दिया और बोला, मैं वहीं शादी करूंगी जहाँ मेरा परिवार चाहेगा। अब गंगा 20 साल की हो चुकी थी। उसके मन में एक उल्लास सा हमेशा रहता था लेकिन वह समझ नहीं पाती थी कि, यह खुशी, यह एक ताजगी किस चीज की है। लेकिन उसे हर पल ऐसा एहसास होता था जैसे उसकी जिंदगी बदलने वाली है। जो लड़का उसे विश्वविद्यालय के पहले दिन मिला था उसका नाम राहुल था। वह गंगा की ही कक्षा में पड़ता था और नाटक मंडली में भी था। राहुल भी गंगा को प्यार करने लगा था, अपने मन ही मन में। राम और राहुल भी अच्छे दोस्त बन गए थे। राम का एक बड़ा भाई भी था, जो इस कॉलेज में ही पढ़ता था। वह भी इन लोगों के साथ नाटक में था। गंगा को ऐसा लगता था जैसे राम का बड़ा भाई उसे अपनी तरफ आकर्षित करता है। वह गंगा की हर आदत का ध्यान रखता था जैसे उसके मन में कुछ चल रहा है। गंगा को कभी–कभी दोनों भाईयों पर शक भी होता था कंही वह दोनों गंगा का फायदा तो नहीं उठाना चाहते हैं। फिर एक ही पल में वह खुद से सवाल करती थी तू यह सब क्या सोच रही है सभी लोग एक जैसे नहीं होते हैं। कुछ समय पश्चात् गंगा के पापा फिर गांधीनगर परिवर्तित हो गए। गंगा गांधीनगर पहली बार अकेली ही गई थी विश्वविद्यालय खत्म होने के बाद। पहले ही दिन उसकी बस राम के घर के सामने खराब हो गई।

गंगा को तब यह पता नहीं था कि, वह दूर जो घर दिखाई दे रहा है वह राम का है। फिर वह जैसे तैसे दूसरी बस पकड कर अपने घर चली गई। उसने यह सब अपनी माँ को बताया। एक दिन राम को यह पता चला कि, गंगा भी गांधीनगर में ही आ गई है। राम गंगा को अपनी तरफ आकर्षित करने के लिए नए–नए तरीके अपनाने लगा। जिनसे गंगा बेखबर थी। जिस बस में गंगा आया जाया करती थी राम भी उसी बस में आने लगा था। गंगा के करीब आने के लिए। गंगा आसमान में उड़ रहे पंक्षी की तरह रहती थी अपनी दुनिया में खुश। गंगा के विश्वविधालय के समारोह का समय करीब आ रहा था। इसलिए उसे अपना ज्यादा से ज्यादा वक्त नाटक अभ्यास के लिए ही निकालना पड़ता था। कई बार रात को वह 12:00 बजे के बाद घर आती थी। इसलिए उसके प्रोफेसर ने उसकी जिम्मेदारी राम के बड़े भाई रमेश को सौंप दी। जब रमेश गंगा को घर छोड़ने जाता तो राम को अपने ही भाई से जलन होने लगती थी। लेकिन गंगा तो उन दोनों को सिर्फ अपना अच्छा दोस्त ही मानती थी। उसे तब यह कहाँ पता था कि दोनों भाई गंगा की तरफ आकर्षित हैं। राम अपने परिवार और खानदान वालों को किसी न किसी बहाने से कॉलेज बुलाता रहता था और गंगा से मिलवाता रहता था। जब गंगा चली जाती थी तब वह उन लोगों को यह बोलता था कि, एक दिन मैं उसे अपने जाल में फांस ही लुंगा। उस परिवार में क्या खिचड़ी पक रही थी वह उस सब से अंजान थी।

एक दिन राम ने अपने सभी दोस्तों को अपने घर बुलाया अपने जन्मदिन वाले दिन, गंगा को भी बुलाया। उस दिन गंगा बहुत सुंदर लग रही थी। उस दिन सभी लोग गंगा को देखते ही रह गए थे। उसके घरवालों ने उस दिन ठान लिया था कि अब तो इसको हम अपने ही घर लेकर आएंगे क्योंकि वह लोग अपने समाज में वाह–वाह लूटना चाहते थे कि, उनके बेटे ने पुलिस वाले की बेटी को फांसा है। उसके इस खेल मे मास्टर माइंड उसकी माँ का और उसके जीजा का था। एक दिन उनकी तैयारी विश्वविद्यालय में होने वाली थी इसलिए सभी को वहां पर वक्त से पहले पहुँचना था। सभी उस दिन सीधा अपने–अपने घरों से ही आए थे। गंगा भी वहां पर आई थी। जब वह वहाँ पहुँची तो उसके सारे दोस्त विश्वविद्यालय के बाहर ही खड़े हुए थे। गंगा ने सब को हाय हैलो बोला और उसे वहाँ पर रमेश दिखाई नहीं दिया तो उसने राम से पूछा अरे तेरा भाई कहाँ है ? तो राम अपने भाई का नाम सुन कर चिड़ गया। उसने गंगा को झूठ बोल दिया जा अंदर जा हॉल में वह तेरा इंतजार कर रहा है। गंगा उसकी बात सुनकर अंदर चली गई । वहाँ जाकर देखा तो वहाँ पर ताला लगा हुआ था। उसने वापस आकर राम से पूछा तूने झूठ क्यों बोला वहाँ तो कोई नहीं था।

तभी उसक भाई वहाँ आ गया और राम अपने भाई को वहाँ देख कर बिना कुछ बोले वहाँ से चला गया। गंगा के मन में कुछ उथल–पुथल होने होने लगी थी आखिर यह चल क्या रहा है। उसे ऐसा लग रहा था कहिं दोनो भाई मिल कर मेरे साथ कोई खेल तो नहीं खेल रहे हैं। लेकिन गंगा ने अपने दिल की बात नहीं मानी और सौचा मेरे मन में अजीब–अजीब से ख्याल क्यों आते रहते है। उनका विश्वविद्यालय के महोत्सव का दिन आ गया था। उस दिन गंगा का परिवार और राम का परिवार पहली बार मिले थे । राहुल का परिवार भी वहाँ पर आया था। गंगा ने अपने परिवार को अपने सारे दोस्तों से मिलवाया। उस दिन गंगा किसी अपसरा से कम नहीं लग रही थी। उस दिन सभी लोग गंगा को देखते ही रह गए थे। लेकिन राम की बहन ने अपने भाई राम से यह बोला कि गंगा के अंदर कोई भी खूबसूरती नहीं है। तुझे गंगा से भी कई ज्यादा सुंदर लड़कियां मिल सकती हैं। राम की बहन पूजा पहले ही दिन से गंगा से जलती थी। महोत्सव के बाद सभी अपने अपने घर वापस लौट गए। दो दिन की छुट्टी के बाद वापस गंगा कॉलेज आना शुरू हो गई। राम किसी न किसी बहाने से गंगा के घर चला जाता था। जो उसके पापा को बिल्कुल भी पसंद नहीं था। वह गंगा को हमेशा डांटते रहते थे राम की वजह से। वह उसे अपने घर भी बुलाता रहता था लेकिन गंगा कभी उसकी बातों में नहीं आती थी। राम उसकी ही बस में आता जाता था। वह हमेशा यह कोशिश करता था कि वह गंगा के ही साथ रहे। लेकिन गंगा का कभी इन सब बातों पर ध्यान ही नहीं जाता था। वह उसको और अपने सभी दोस्तों को बहुत ही सीधा और सच्चा मानती थी लेकिन ऐसा नहीं था। राम नई–नई योजनाएँ बनाता रहता था गंगा के करीब जाने के लिए और गंगा के मन में अपनी जगह बनाने के लिए। गंगा इन सब बातों से अनजान थी। राम अपनी माँ की किसी न किसी बहाने से कॉलेज बुलाता रहता था और गंगा से मिलवाता रहता था। कभी–कभी तो वह (राम की माँ) गंगा को अपने ही साथ लेकर जाती थी बस में। अब गंगा के दिमाग में धीरे–धीरे राम के परिवार की एक छवी अच्छी बनने लगी थी। राम की माँ गंगा के लिए कुछ न कुछ खाने के लिए भेजा करती थी। गंगा इस बात से बेखबर थी कि, वह लोग अब उसके ऊपर काला जादू करवा रहे हैं। क्योंकि उनके बेटे का दिल आ गया था गंगा के ऊपर। उसे यह नहीं पता था कि, वह किन लोगों के जाल में फँसने वाली है। गंगा की एक नई सहेली बनी थी जिसका नाम काजल था। यह सभी मित्र एक साथ खाते–पीते थे। एक साथ हँसी मजाक भी करते थे। राम काजल की तरफ भी आकर्षित था। काजल भी राम की तरफ आकर्षित थी। लेकिन वह दोनों शादी नहीं करना चाहते थे सिर्फ समय व्यतीत कर रहे थे एक दूसरे के साथ। एक दिन राम काजल को अपने घर लेकर गया और अपनी माँ से मिलवाया उसकी माँ को वह भी अच्छी लगी। राम की माँ जानती थी कि आज

उसका बेटा उसे घर क्यों लाया है। क्योंकि राम की माँ का चरित्र भी बिगड़ा हुआ था। फिर राम काजल को अपने कमरे में ले गया। उस दिन उन दोनों के बीच शारिरिक सम्बन्ध भी बन गए थे, जिसका उन दोनों में से किसी को भी कोई दुखः नही था। उसके बाद वह दोनों गंगा के घर गए। गंगा उन दोनों को एक साथ देख कर कुछ अचंभे में पड़ गई लेकिन फिर उसने सोचा दोस्त ही तो है। लेकिन फिर भी उसका दिल यह बोल रहा था कि यह सब कुछ दिखावा है। शायद इन दोनों के बीच कुछ और ही है। राम का चरित्र बहुत अजीब सा था। वह गंगा को आकर्षित करने के लिए काजल का इस्तेमाल भी कर रहा था और उसके साथ नाजायज सम्बन्ध भी बना भी बना रहा था। उस दिन भी राम की माँ ने गंगा के लिए सफेद रंग की मिठाई भेजी थी उस मिठाई में राम की माँ ने कुछ मिलाया हुआ था। गंगा बहुत ही भोली थी। लेकिन धीरे–धीरे गंगा के भी मन में राम के बार–बार ख्याल आना शुरू हो गए थे। गंगा समझ नहीं पा रही थी कि यह क्या हो रहा है। कल तक जो लड़की किसी भी मर्द को पसंद नहीं करती थी अब अचानक से वह राम के बारे में कैसे सोचने लगी थी। वह खुद को राम से दूर रखने की कोशिश करती थी लेकिन वह ऐसा कर नहीं पाती थी और दूसरी तरफ राम गंगा के दोस्तों के साथ मौजा मस्ती भी करता था और उनकी मदद भी मांगता था गंगा तक पहुंचने के लिए। ऐसा लगता था जैसे राम के शरीर में कोई शैतान रहता है। एक दिन राम के पापा बीमार हो गए तो उसके सभी दोस्त उसके पापा को देखने अस्पताल गए। वहां गंगा भी आई उन सब के साथ। उस दिन भी राम ने काजल के साथ मिलकर एक योजना बनाई थी, गंगा के प्रति। उस दिन वह (राम) काजल के ही साथ हाथ में हाथ डाल कर घूम रहा था। गंगा को नजर अंदाज कर रहा था। सिर्फ काजल को ही मूल्य दे रहा था। जो गंगा को पसंद नही आ रहा था और उस दिन गंगा गुस्से में अपने घर वापस चली गई। वह फिर दो दिन तक विश्वविद्यालय नही गई। जब वह विश्वविद्यालय गई तो राम ने उससे कहा कि, मेरी माँ को काजल पसंद है और हम दोनों शादी करने वाले हैं तू क्या बोलती है। यह सुनकर गंगा की आखें नम हो गई शायद अब गंगा, राम को प्यार करने लगी थी। वह गंगा की सबसे बडी गलती थी। गंगा को यह आभास नहीं था किस अब उसकी जिंदगी बदलने वाली है। राम के बहुत सारी स्त्रियों के साथ नाजायज सम्बन्ध थे।जिसके बारे में राम ने गंगा को कभी भी पता नहीं चलने दिया था। वह गंगा से प्यार ही नहीं करता था गंगा को पाना ही उसका जुनून था। वह गंगा को भी काजल जैसी ही समझता था। वह गंगा की तरफ सिर्फ आकर्षित था। उसे गंगा के दिल या मन से कोई मतलब नहीं था। लेकिन गंगा को ऐसा लगता था कि वह उससे प्यार करता है। क्योंकि अब गंगा का ज्यादा से ज्यादा समय राम के साथ ही बीतने लगा था। अब गंगा भी राम को प्यार करने लगी थी। एक दिन

गंगा अपने कॉलेज में परीक्षा की पढ़ाई छत की सीड़ियों पर बैठ कर रही थी और छुट्टी हो चुकी थी। वहाँ केवल कुछ अध्यापक और नाटक के विद्धयार्थी ही थे और वहाँ के कर्मचारी थे। गंगा जहाँ पर बैठी थी, वहाँ न जाने कहाँ से कोई बाहर का लड़का आ गया और गंगा के सामने अपने कपडे उतारने लगा। जब गंगा का उसकी तरफ ध्यान गया तो वह बहुत डर गई और उसकी आवाज डर से बंद हो गई जैसे ही गंगा वहाँ से नीचे उतरने लगी उस लड़के ने गंगा का हाथ पकड़ लिया। गंगा को ऐसा लग रहा था मानों आज उसके जीवन का आखिरी दिन है। लेकिन उसने तुरंत ही खुद को संभाला और अपना बैग ज़ोर से उस लड़के के मुँह पर दे मारा। जिससे लड़का सिड़ियों पर जा कर गिर गया । उस दिन ऐसा लगा था जैसे गंगा के रूप में देवी माँ वहाँ आ गई हों। फिर गंगा वहां से जोर से भागी चली गई एक ही साँस में। जहाँ सभी बच्चे बैठे थे गंगा वहाँ गई। श्याम ने और राहुल ने उसे पूछा क्या हुआ तू इतनी डरी हुई क्यों है। गंगा जोर–जोर से रोने लगी थी। राहुल ने उससे फिर बोला रोना बंद कर और बात बता क्या हुई। उसने फिर थोड़ा शांत होकर राहुल को सारी बात बताई। यह सुनकर राहुल गुस्से में आ गया और वह गंगा के साथ वहाँ गया लेकिन वहाँ कोई भी नहीं था। वह लोग वापस नीचे उतर आए। लेकिन उस समय राम और काजल का कोई अता–पता नहीं था। ऐसा लग रहा था जैसे उस दिन जो कुछ भी हुआ वहा एक सोची समझी चाल थी जब राम वापस आया तो राहूल ने उससे पूछा तू कहाँ गया था। उसने कहा मैं तो यहां पर था तुम लोगों ने ही मुझे नहीं देखा। जब राम को यह सब पता चला तो जैसे उसे कोई फरक नहीं पड़ा। यह सब देख कर गंगा को बुरा भी लगा और अजीब भी। गंगा ने उसके बारे में फिर से सोचा। यह लड़का मुझसे प्यार करता है लेकिन इसको बिल्कुल भी बुरा नही लगा मेरे लिए। गंगा ने भगवान से पूछा क्या मेरा फैसला सही है, मैं कोई गलती तो नहीं कर रही हूँ। लेकिन उस दिन उसने उसका बचपना समझ कर छोड दिया। गंगा उस दिन राम से नाराज थी, क्योंकि उस दिन गंगा को राम की बहुत जरूरत थी और वह उसके साथ नहीं था। जब गंगा अपने घर गई, उस दिन वह बहुत दुःखी थी। घर जाकर उसने अपनी माँ से ज्यादा बात नहीं की और वह चुप–चाप थी उसको (गंगा) को परेशान देख कर गंगा की माँ ने उससे पूछा क्या हुआ आज तू इतना परेशान क्यों है। उसने अपनी माँ को सारी बात बता दी। यह सुनकर उसकी माँ घबरा गई और गंगा से बोली अपना ध्यान रखा कर अकेले कहीं भी मत जाया कर। कुछ दिन बीतने के बाद एक दिन वह कॉलेज से घर आ रही थी। उस दिन उसकी बस छूट गई तो फिर उसने दूसरे रूट की बस पकड़ ली थी। अगले वाले स्टॉप से एक लड़की बस में चढ़ गई और वह गंगा के पास जाकर बैठ गई । जब वह लड़की बस स्टॉप पर खड़ी थी तब गंगा उसे देख रही थी। वह लड़की बहुत अजीब सी लग रही

थी। ऐसा लग रहा था उसे देखने के बाद जैसे कि उसे लकवा मारा हुआ है। जब वह गंगा के पास आकर बैठ गई तो वह ठीक से बोल भी नहीं पा रही थी। गंगा को बहुत अजीब सा लग रहा था। गंगा ने उस लडकी से पूछा आपको क्या हुआ है, आपको कोई तकलीफ है क्या? वह लडकी रोने लगी और हकलाते हुए बोली मरे पेट में दर्द हो रहा है। उस लडकी का मुँह टेड़ा हो रहा था, वह हकला कर बोल रह थी, उसके हाथों की अंगुलियाँ टेड़ी हो रही थी, वह ठीक से न तो बैठ पा रही थी और न ही बोल पा रही थी। वह मेरी (गंगा) की गोद में आ कर गिर गई। गंगा एक दम से डर गई गंगा ने उस लड़की को पानी दिया और बोला तुम्हारी ऐसी हालत कैसे हुई है। तुम्हें कोई बीमारी है क्या? उस लड़की ने हकलाते हुए कहा मेरे पेट में बहुत तेज दर्द था तभी मेरे सामने से एक भिखारी निकला जिसको लकवा मारा हुआ था। उसे देख कर मैनें अपनी सहेली से बोला मेरे पेट में इतना दर्द हो रहा है, सहन ही नहीं हो रहा है। लगता है मैं मर ही जाऊँगी । ऐसे दर्द होने से तो यह अच्छा है कि इस आदमी जैसा होना कोई दर्द तो सहन नही करना पड़ेगा। बस उस आदमी के गुजरने के बाद से एक दम मेरी यह हालत हो गई। वह कराहते हुए बार–बार भगवान को याद कर रही थी और बोल रही थी हे भगवान मुझे मौत दे दे। गंगा उसकी बातें सुन रही थी और साथ ही साथ उसके हाथों को अपने हाथों से मालिश कर ही थी, कभी उसकी पीठ पर अपने हाथों से मालिश कर रही थी। गंगा ने उसकी सारी बातें सुनने के बाद उसे यह बोला तुम्हारी यह हालत इसलिए हुई है क्योंकि तुमने उस बूढ़े बीमार आदमी का मजाक उडाया था। तुमसे अपना दर्द सहन नहीं हो रहा था लेकिन तुम्हे उस आदमी की पीड़ा नज़र नहीं आई। वह तो अपनी तकलीफों के साथ जी रहा है। जरा सोचो तुम्हारी तकलीफ बड़ी थी या उस आदमी की! जिसकी तो कोई मदद तक नहीं करना चाहता है। वह लड़की यह सब सुन रही थी और दर्द से कराह रही थी। गंगा ने उस लड़की से यह बोला अच्छा अब सारी बातें छोड़ो और जो मैं बोलती हूँ मरे पीछे–पीछे बोलो देखो फिर मैं विश्वास दिलाती हूँ जब तक तुम्हारा घर आएगा तुम बिल्कुल ठीक हो जाओगी। गंगा ने बोला है भगवान मुझे मॉफ करना मैने उस बीमार आदमी का मजाक उडाया। मैं अपने सच्चे दिल से आप से माफी मांगती हूँ आज के बाद ऐसा कभी नहीं करूंगी अपने पूरे जीवन में। लेकिन मुझे माफ कर दो। मैं आपसे वादा करती हूँ। गंगा ने उस लड़की से कहा, अब तुम चिंता मत करो अब तुम ठिक हो जाओगी। गंगा उसको समझाती जा रही था और उसके हाथों को अपने हाथों से मालिश भी करती जा रही थी, वह कभी उकस सिर दबाती थी और उससे बातें कर रही थी। धीरे–धीरे वह लड़की ठीक होने लगी। बस में बैठे सभी यात्री यह सब देख रहे थे लेकिन कोई भी उसकी मदद करने नहीं आया। बस मैं बैठे–बैठे घंटा हो गया था और उस लड़की का घर आने

वाला भी था। उस लड़की ने गंगा को पूछा दीदी आप मूझे मेरे घर तक पहुँचा देंगी क्या ? गंगा ने बोला ठीक है कोई बात नहीं । गंगा ने उस लड़की का नाम पूछा। उसने अपना नाम भूभी बताया। भूभी ने गंगा से बोला दीदी आपको देर तो नहीं हो जाएगी घर पहुँचने के लिए। गंगा ने कहा नहीं होगी तुम चिंता मत करो। भूभी का स्टॉप आ गया था। गंगा भी उसके ही साथ उतर गई। गंगा ने भूभी का भी बेग पकड़ लिया । गंगा उस जगह पर पहली बार आई थी। गंगा को थोड़ा डर भी लग रहा था कहीं किसी की कोई चाल तो नही है मेरे प्रति। लेकिन फिर भी वह चलती चली जा रही थी भूभी के साथ गंगा मन ही मन भगवान को बोल रही थी हे भगवान मदद करना हमारी। भूभी बहुत खुश थी और वह गंगा को बार–बार धन्यवाद भी कर रही थी और बोल रही थी आज आप नहीं होती तो आज मेरा क्या होता। गंगा ने हंसते हुए बोला किसी न किसी को तो मदद करनी ही होती है। चलते–चलते भूती का घर भी आ गया था। भूभी गंगा को अपने घर के अंदर लेकर गई। भूभी का घर बहुत ही बड़ा था। उकसे घर में उसकी बड़ी बहन और माँ थे। भूभी ने सारी बातें अपनी माँ को बताई। लेकिन उसकी माँ को यह सब एक कहानी लग रही थी। भूभी की माँ गंगा को अजीब सी नजरों से देख रही थी। उसकी माँ ने गंगा से उसके परिवार के बारे में पूछा और बोला तुम भूभी को कब से जानती हो। गंगा ने बोला आज ही तो हम मिले हैं पहली बार! भूभी गंगा के लिए कुछ खाने के लिए लेकर आई, परन्तु गंगा को उसके घर वालों का व्यवहार बहुत अजीब सा लग रहा था। काफी देर तक गंगा उसके घर बेठी बातें करती रही फिर उसने भूभी को बोला मुझे देर हो रही है। अब मुझे चलना चाहिए। बातों–बातों में गंगा ने भूभी को बताया कि, वह एक लड़के को प्यार करती है और उसका घर भी यहीं पर थोडी दूरी पर है। भूभी ने एक दम से गंगा को कहा दीदी आप उस लड़के से शादी मत करना। गंगा को बहुत अटपटा लगा यह सुनकर लेकिन उसने भूभी की बात को मन पर नहीं लगाया। गंगा ने भूभी को पूछा क्या तुम उन लोगों को जानती हो। भूभी ने कहा नहीं लेकिन उस परिवार के बारे में मैंने बहुत कुछ सुना है। गंगा को कुछ शंका हुई इस रिश्ते को लेकर। गंगा ने भूभी से फिर पूछा आप उन लोगों के बारे में क्या जानती हो लेकिन भूभी थोड़ा सा सहम गई और कहा दीदी अगर आप उससे शादी करना चाहती हो तो आपकी इच्छा लेकिन आपका यह फैसला दर्दनाक हो सकता है। और भूभी ने कुछ भी नहीं कहा। गंगा को थोड़ा शक हुआ लेकिन सब कुछ भगवान पर छोड़ दिया गंगा ने। फिर वह अपने घर चली गई। घर पहुँच कर गंगा ने अपनी माँ को सारी बाते बताई। उसकी माँ उसकी सरी बातें ध्यान से सुन रही थीं। उसकी माँ ने उसे शाबासी दी और कहा अच्छा हुआ आज तू उसके साथ थी। अगर आज तू वहाँ नहीं होती तो आज उस लड़की का क्या होता। गंगा ने अपनी माँ को कहा, आज तक मैंने भगवान के बारे में

सिर्फ सुना था लेकिन आज उसकी शक्ति को मैनें देख भी लिया। उस दिन गंगा बहुत खुश थी। उसे एक अजीब सी खुशी हो रही थी उस दिन। कुछ दिनों तक भूभी का फोन गंगा को आता रहा और वह उससे काफी देर तक बातें करती थी। भूभी को गंगा से बात करना बहुत अच्छा लगता था। धीरे–धीरे भूभी के फोन आना बंद हो गए। गंगा ने उसे बहुत ढूंढने की कोशिश की लेकिन वह नहीं मिली। गंगा ने फिर उसकी आस छोड़ दी। समय निकलता गया अब गंगा राम को बहुत प्यार करने लगी थी। उसे राम के ऊपर पूरा विश्वास हो चुका था। उसे ऐसा लगता था कि राम ही वह लड़का है जो उसका जीवन साथी बनने के लायक है। राम गंगा के सामने बहुत ही शरीफ बनने का नाटक करता था। जिस पर गंगा अंधा विश्वास करती थी। लेकिन राम और राम का परिवार उसके विश्वास के लायक नहीं था। राम गंगा का ध्यान रखता था। उसके सामने अपने परिवार को बहुत ही संस्कारी बताता था। बहुत ही आदर्शवादी बातें करता था और वह गंगा से यह बोलता था कि, वह औरतों की बहुत इज्जत करता है। वह यह कहता था कि, वह उन लोगों से नफरत करता है जो लोग औरतों पर जुर्म करते हैं और उन्हें धोखा देते हैं। गंगा उसकी बातों को सुन कर उसकी तरफ और भी ज्यादा प्रभावित होती चली जा रही थी। गंगा मन ही मन भगवान् को धन्यवाद करती थी कि, उसे एक सच्चा और संस्कारी लड़का मिला है। लेकिन उसे यह नहीं पता था कि, यह सब बातें एक दिखावा था उसे अपने जाल में फंसाने के लिए। राम गंगा को किसी न किसी बहाने से अपन घर बुलाता था क्योंकि, एक काला जादू करने वाले तांत्रिक ने ऐसा बोला था राम की माँ को तांत्रिक ने यह बोला था कि, जितना हो सके उसे अपने घर बुला कर अपने वश में रखो तो जो भी तुम चाहते हो वह सब कुछ तुम्हें मिल जाएगा। गंगा किस दल–दल में फंसती चली जा रही थी उसे इस बात का कोई अंदाजा नहीं था। वह तो अब इस परिवार को अपना ही परिवार मानने लगी थी। गंगा बहुत ही भोली थी। उसे तो बुराई में भी अच्छाई नजर आती थी। गंगा के घरवालों को राम और गंगा का रिश्ता पसंद नहीं था। उनका कहना था कि राम का परिवार हमारे घर के लायक नहीं है। दोस्ती के लायक यह लोग ठीक हैं लेकिन रिश्ते के लिए नहीं। लेकिन गंगा के आँखों पर तो राम और उसके परिवार के नाम की पट्टी बंधी हुई थी। इसलिए उसे अपने घरवालों की बातें समझ ही नहीं आती थीं। राम गंगा के घर किसी न किसी बहाने से आ ही जाता था। गंगा को अच्छा भी लगता था और डर भी लगता था अपने परिवार वालों से। अब गंगा का परिवार उस पर नज़र रखने लगा था लेकिन फिर भी उन्हें गंगा पर भरोसा था कि, वह कभी कोई गलत काम नही गरेगी और अपनी मर्यादा में ही रहेगी। जब यह बात गंगा के भाई–बहन को पता चली तो वह लोग बहुत नाराज हुए लेकिन किसी ने भी उससे बात करना जरूरी नहीं समझा। वह दोनों अचानक से ही

अपने घर आ गए थे। उस समय गंगा कॉलेज में ही थी। उस दिन गंगा का कॉलेज में एक प्रदर्शन था इसलिए वह उस दिन रात को 12:30 बजे घर पहुँची। जब वह घर आई तो उसने देखा मुख्य हाल में उसके भाई–बहन और माँ–पिताजी बैठे उसके आने का इंतजार कर रहे थे। जैसे ही उसने उन्हें देखा वह खुशी के मारे पागल हो गई थी और जाकर अपने भाई – बहन से लिपट गई। परन्तु उसके भाई–बहन के चहरे पर वह खुशी नहीं थी। उसे उनकी नजरों में अपने लिए नाराज़गी नजर आई। परंतु तब तक उसे यह नहीं पता था कि, उसकी माँ ने उन्हें यह सब पहले ही फोन कर बता दिया था। उसकी माँ ने ही उन्हें कहा था कि तुम दोनों यहाँ पर आकर उसे समझाना। गंगा इन सब बातों से अंजान थी। तभी उसके पिताजी ने गुस्से से पूछा इतना देर से क्यों आई है। यह वक्त है तेरा घर आने का। समाज क्या सोचेगा। उसके पिता उसे डांट ही रहे थे तभी राम घर के अंदर आया। उसे देख कर सभी को बहुत बुरा लगा और वह एक–दूसरे की ओर देखने लगे। तभी गंगा ने राम को अपने भाई–बहन से मिलवाया यह बोलकर कि, यह मेरा दोस्त है। उसकी यह बात सुनकर उसके भाई–बहन वहाँ से चले गए। यह देखकर गंगा को बहुत बुरा लगा। गंगा ने राम से मॉफी मांगी अपने परिवार के इस व्यवहार के लिए। राम को बहुत बुरा लगा और उसी पल उसने उन लोगों से बदला लेने का ठान लिया। उसने मन ही मन यह सोचा अब मैं जब तक इन लोगों को अपने पैरों में गिरा नहीं लुंगा मुझे चैन नहीं आएगा। परंतु उसने गंगा को कुछ भी महसूस नहीं होने दिया अपने बारे में। उस दिन उसने यह निश्चय कर लिया था कि, अब मैं इन लोगों का जीवन नर्क बना दूँगा लेकिन अपने तरीके से धीरे–धीरे। राम ने गंगा को बड़ी ही मासूमियत के साथ बोला अच्छा मैं चलता हूँ आप अपना ध्यान रखना, हम कल मिलेंगें। गंगा उदासी के साथ अंदर आई और देखा वहाँ कोई भी नहीं था। सभी लोग अपने–अपने कमरों में जाकर सो चुके थे। गंगा फिर भी अपने भाई–बहन के कमरों में उनसे बात करने आई लेकिन किसी ने भी उससे बात नहीं की और कहा अभी हमें सोना है कल बात करेगें हम। अगले दिन गंगा का भाई राजीव उठकर आया और अपनी माँ को पूछा गंगा कहाँ है। उसकी माँ ने कहा वह तो सुबह ही कॉलेज चली गई थी। राजीव ने गुस्से से बोला आपने उसे जाने क्यों दिया। आपको क्या मालूम नहीं है वह क्या कर रही है। माँ ने कहा मुझे पता है लेकिन मुझे उस पर भरोसा है वह कभी भी कोई गलत काम नहीं करेगी और हमें उसके साथ कोई सख्ती नहीं बरतनी चाहिए। धीरे–धीरे हम उसे उस लड़के से दूर कर देंगे राजीव चिल्लाता हुआ वहाँ से निकल गया आज आने दो उसे मैं अच्छे से खबर लूंगा उसकी। तभी गंगा की बहन बाहर आई और उसने भी यही सवाल किया अपनी माँ से। लेकिन उसने कुछ भी नहीं बोला अपनी माँ से । उस दिन जब गंगा वापस घर आई तो सभी अपने–अपने काम कर रहे थे।

थोड़ा समय बीतने के बाद राजीव ने गंगा को अपने कमरे में बुलाया तो गंगा वहाँ चली गयी और उसने अपने छोटे भाई राजीव से पूछा कैसा है तू भाई। राजीव ने फीका सा जवाब दिया हम तो ठीक हैं लेकिन लगता है तू ठीक नहीं है। गंगा को उसका व्यवहार अटपटा लगा। हमेशा की तरह गंगा ने उसको छोटा समझ कर मॉफ कर दिया। तभी वहाँ उसकी माँ और बहन भी आ गई। गंगा को कुछ–कुछ समझ में आ रहा था उनके व्यवहार से लेकिन फिर भी उसे यह यकीन नहीं था कि, उसके भाई–बहन ऐसा भी कर सकते हैं। राजीव ने गंगा से राम के बारे में पूछना शुरू किया ही था कि, अचानक फोन की घंटी बजी और गंगा भागती हुई बाहर गई और उसने फोन को उठाया। फोन पर राम था गंगा राम के साथ बात कर ही रही थी कि अचानक राजीव वहाँ आ गया। गंगा ने राजीव की तरफ हँसते हुए देखा और उसने इशारे में बोला मैं अभी पाँच मिनट में आती हूँ। लेकिन राजीव वहीं खड़ा रहा। गंगा ने उसे फिर से देखा लेकिन राजीव वहाँ से नहीं गया और बोला फोन बंद कर अभी के अभी। गंगा को उसका व्यवहार अच्छा नहीं लगा। गंगा ने फोन पर हाथ रखा और थोड़ा तेजी से बोला तू अंदर जा मैं अभी आती हूँ । राजीव ने गुस्से से गंगा के हाथ से फोन छीन लिया और फोन को काट दिया। क्योंकि गंगा राजीव की बड़ी बहन थी इसलिए राजीव का यह व्यवहार उसे अपनी बेइजति महसूस हुई। गंगा ने डाँटते हुए राजीव को बोला यह क्या बदमिजी है। गंगा ने फिर से फोन उठाया और फोन डायल करने ही लगी थी कि अचानक राजीव ने फोन को छीन कर जमीन पर दे मारा और गंगा को दो थप्पड़ लगा दिये फिर वह उसको घसीटते हुए उसके कमरे तक ले गया। यह सब गंगा की माँ और बहन देख रही थी। फिर भी किसी ने राजीव को नहीं रोका। राजीव उसके साथ ऐसा व्यवहार कर रहा था मानो वह गंगा से 20–25 साल बड़ा भाई है। लेकिन वह तो गंगा से दो साल छोटा था। तभी उसकी माँ वहाँ आकर राजीव को अपने साथ ले गई। गंगा अपने कमरे में राती रही लेकिन उसके पास कोई नहीं आया। इन सब बातों से गां बहुत दुःखी थी। ऐसा व्यवहार तो उसके माँ–पिता जी ने भी नहीं किया था जैसा व्यवहार उसका छोटा भाई कर रहा था और उसकी माँ खडे–खड़े यह सब देख रह थी। उसे तो अपने बेटे को बड़े और छोटे का फर्क सिखाना चाहिए था। बचपन से ही गंगा के साथ ऐसा व्यवहार होता चला आया था। हमेशा गंगा को ही परीक्षाएँ देनी पड़ती थीं। जब भी वह कोई नादानी या गलती करती थी तो उसकी माँ बड़ी बेटी से उसके हाथ–पैर बंधवा देती थी और छोटे बेटे से थप्पड़ लगवाती थी। आज गंगा के मन में वह सारी यादें ताजी हो रही थीं। गंगा अपने परिवार को बहुत प्यार करती थी इसी लिए वह हर बात को बहुत मामूली समझती थी। लेकिन ऐसा नहीं था कि उसे यह सब बुरा नहीं लगता था। गंगा बचपन से ही चुलबुली थी इसलिए हर गलती का जिम्मेदार उसी को ठहरा दिया

जाता था। बचपन से ही गंगा अपने भाई की रक्षा करती आई थी लोगों से। कितनी बार वह अपने भाई के लिए अपने से भी बहुत बड़े इंसान से उलझ जाती थी। वह यह सोचती तक नहीं थी कि, इसका अंजाम क्या होगा। राजीव को जितना प्यार गंगा करती थी इतना प्यार उसकी बड़ी बहन पूनम भी नहीं करती थी। लेकिन आज राजीव सब कुछ भूल चुका है। आज उसे सिर्फ अपन गुस्सा और जवानी का जोश ही याद रह गया है। गंगा के मन में यह सब चल रहा था और वह रो रही थी। उसने उस दिन खाना तक नहीं खाया था। लेकिन राजीव को इन बातों का कोई अफसोस नहीं था। रात को उसकी माँ गंगा के कमरे में आई गंगा को बुलाने तब गंगा ने अपनी माँ से ठीक तरह से बात नहीं की और बोला आपको अब समय मिला है मेरे पास आने के लिए। गंगा ने अपनी माँ से सवाल किया आज जो भी कुछ राजीव ने किया क्या वह ठीक था। आपने उसे बहुत छूट दे रखी है। उसकी माँ ने भी पलट कर उसे जवाब दिया तो क्या तू ठीक कर रही है। गंगा ने अपनी माँ को कहा क्रूा प्यार करना गुनाह है? अभी तो ठीक से आप लोग राम और उसके परिवार को जानते तक नहीं हो। क्या राजीव मेरे से पहले बात नहीं कर सकता था। वह क्या दिखाना चाहता था उसकी माँ राजीव की गलतियों पर पर्दा डालना चाहती थी। गंगा ने माँ को बोला आज तो मैंने उसे छोटा समझ कर छोड़ दिया लेकिन यदि आगे से ऐसा हुआ तो शायद मैं उसे मॉफ नहीं कर पाऊँगी। गंगा की माँ ने एकदम से बोला लेकिन उसने तेरे से मॉफी कब मांगी है जो तू उसे माफ करते और न करते की बातें कर रही है। इनता बोलकर गंगा की माँ वहाँ से चली गई। आज उसे ऐसा महसूस हो रहा था मानो आज वह संसार में अकेले खड़ी है। उसका आज कोई सहारा नहीं है। परंतु उसे इस बबात का भी दुःख था कि जब पूनम दीदी की किसी से प्रेम हुआ था या राजीव को किसी से प्रेम हुआ था। उस समय मैंने उन दोनों पर भरोसा किया था और उन्हें सहारा भी किया था। मैंने उन दोनों की बातों को माँ या पिताजी के सामने कभी भी उजागर नहीं होने दिया था। यह सब कुछ गंगा के मन में चल रहा था। जब तक राजीव घर पर रहा उसने गंगा से कोई बात नहीं की। पूनम अभी भी वहाँ पर ही थी। पूनम ने भी गंगा से राम के बारे में सब कुछ पूछा। गंगा ने सब कुछ राम के बारे में पूनम को बता भी दिया। गंगा ने कहा दीदी राम का परिवार बहुत खुले विचारों वाले हैं और राम औरतों की बहुत इज्जत करता है। वह मुझे भी बहुत प्यार करता है। पूनम ने गंगा को कहा तू इतना यकीन के साथ कैसे बोल सकती है उस लड़के के बारे में । तू क्या जानती है उसके बारे में। गंगा ने पूनम से कहा मैं उस पर बहुत भरोसा करती हूँ। यदि हम किसी पर भरोसा नहीं करेंगे तो हम अपना रिश्ता मजबूत कैसे करेंगे। अगर हम किसी को मौका ही नहीं देंगे खुद को साबित करने का तो कोई भी इंसान खुद को सच्चा और सही साबित कैसे करेगा। और वैसे भी

दीदी प्रेम के बदले हमें प्रेम ही मिलता है, धोखा नहीं । पूनम ने गंगा से कहा राम के चेहरे से शराफत नहीं झलकती है उसे देखने के बाद मुझे उसके चेहरे के पीछे कोई शैतानी दिमाग दिखाई दे रहा था। तू इतनी सुंदर है और वह लड़का तेरे पास खड़े रहने के लायक भी नहीं है। तू दूध की तरह सफेद है और वह काला है। वह हमारे परिवार में बिल्कुल भी नहीं मिलता है। गंगा ने पूनम से कहा क्या काले लोग प्यार नहीं करते या उनके पास दिल और दिमाग नहीं होता है। इस बात की क्या गेरंटी है कि जो रिश्ता हमारे मम्मी–पापा हमारे लिए लांएगे वह सही होगा यह वह लड़का बहुत ही साफ दिल और मन का होगा। पूनम गंगा को बहुत देर समझाती रही लेकिन गंगा ने एक ही बात अपनी बहन को बोली कि, मुझे भगवान पर पूरा भरोसा है वह मेरे साथ कुछ भी गलत नहीं होने देंगे। पूनम का दिमाग खराब हो चुका था। आखिर में वह वहाँ से उठकर चली गई। अब गंगा के मन में उथल–पुथल होने लगी थी। अगर दीदी की बोली हुई बातें सच हो गईं तो मैं क्या करूंगी। अब गंगा को राम की सी बातें याद आ रही थीं कि वह मेरे साथ कैसे बातें करता है या उकस परिवार मुझे किस नजर से देखता है या राम ने मुझे पने के लिए काजल का सहारा लिया था या फिर उसका बड़ा भाई भी मुझपर अपनी निगाहें रखता था। यह सारी बातें गंगा को परेशान कर रही थी। गंगा को भूभी की बातें भी याद आ रही थी कहिं राम का भूभी से कोई रिश्ता तो नहीं है। इन्हीं सारी बातों को सोचते हुऐ गंगा की आंखे कब लग गई उसे पता भी नहीं चला। फिर सुबह हो गई और वह रोज की तरह ही कॉलेज चली गई लेकिन उस दिन वह बहुत ही शांत थी। सभी ने उससे पूछा क्या हुआ तुझे। गंगा ने किसी को कुछ भी नहीं बताया। लेकिन उसे राम का व्यवहार जरूर परेशान कर रहा था। अभी तक राम उससे मिलने नहीं आया था। नहीं आया था। जब गंगा ऊपर ग्रन्थालय में पड़ने गई तो उसने देखा राम काजल के साथ एक कोने में बेठा हुआ था उकसा हाथ पकड़ कर। गंगा को यह सब देख कर बहुत आशचर्य हो रहा था कि कल रात को इतनी बड़ी बात हो गई है और यह तो आराम से यहाँ पर बैठा हुआ है। वह भी मेरी सहेली के साथ। गंगा के दिमाग में उसकी बहन की बातें घूमने लगीं और वह थोड़ी डर गई यदि मेरा फैसला गलत हुआ तो क्या होगा मेरा और मेरी इज्जत का। गंगा के मन में सवाल जवाब चलना शुरू हो गए थे। गंगा बहुत ही आदर्शवादी लड़की थी यदि वह किसी को कोई वचन देती थी तो वह उसे पूरा करती थी। चाहें फिर उस वचन को निभाने के लिए उसे अपने प्राण ही क्यों न देने पढ़े। गंगा कमरे के दरवाजे पर ही खडी–खड़ी यह सरी बातें सोच रही थी। तभी पीछे से किसी ने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए बोला क्या हुआ गंगा तुम ऐसे क्यों खड़ी हो। उसने पीछे मुड़कर देखा तो उसक अध्यापिका थी जो गंगा को बहुत पसंद करती थी लेकिन उन्हें राम बिल्कुल भी पसंद नहीं था। गंगा ने हँसते हुए अपनी

Thank You for previewing this eBook

You can read the full version of this eBook in different formats:

- HTML (Free /Available to everyone)
- PDF / TXT (Available to V.I.P. members. Free Standard members can access up to 5 PDF/TXT eBooks per month each month)
- Epub & Mobipocket (Exclusive to V.I.P. members)

To download this full book, simply select the format you desire below